ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
भारत मौसम विज्ञान विभाग
गोविंद बल्लभ पंत कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
उधम सिंह नगर, पंतनगर, उत्तराखंड

मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं

दिनांक : 22-11-2024

उधम सिंह नगर(उत्तराखंड) के मौसम का पूर्वानुमान - जारी करनेका दिन :2024-11-22 (अगले 5 दिनों के 8:30 IST तक वैध)

मौसम कारक	2024-11-23	2024-11-24	2024-11-25	2024-11-26	2024-11-27
वर्षा (मिमी)	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0
अधिकतम तापमान(से.)	27.0	27.0	27.0	26.0	26.0
न्यूनतम तापमान(से.)	9.0	9.0	9.0	8.0	8.0
अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	85	85	82	80	83
न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	72	72	72	75	74
हवा की गति (किमी प्रति घंटा)	4	4	4	5	6
पवन दिशा (डिग्री)	90	20	320	330	300
क्लाउड कवर (ओक्टा)	0	0	0	0	0

मौसम सारांश / चेतावनी:

पिछले सात दिनों (15 से 21 नवंबर) में 0.0 मिमी वर्षा दर्ज की गई और अधिकतम और न्यूनतम तापमान 25.0 से 28.0 डिग्री सेल्सियस और 9.0 से 11.6 डिग्री सेल्सियस के बीच रहा। पिछले सप्ताह मौसम साफ रहा। सुबह 0712 बजे सापेक्ष आर्द्रता 92 से 97% के बीच और शाम 1412 बजे सापेक्ष आर्द्रता 39 से 55% के बीच रही। हवा की गति 0.7 से 1.9 किमी प्रति घंटा थी और हवा की दिशा ज्यादातर पश्चिम-दक्षिण-पश्चिम, पश्चिम, पश्चिम-उत्तर-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम थी। आगामी 5 दिनों के पूर्वानुमान में वर्षा का कोई अंदेशा नहीं है। अधिकतम और न्यूनतम तापमान 26.0-27.0 डिग्री सेल्सियस और 8.0-9.0 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा। 4-5 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं ज्यादातर पूर्व, उत्तर-उत्तर-पूर्व, उत्तर-, उत्तर-पश्चिम-उत्तर और उत्तर-पश्चिम-पश्चिम दिशा से चलेंगी। आगामी सप्ताह में शुष्क मौसम रहने की संभावना है तथा 23 नवंबर को मध्यम से भारी कोहरा होने पर पीली चेतावनी जारी की जाएगी।

सामान्य सलाहकार:

छेत्र में मौसम की स्थिति के बारे में नियमित अपडेट के लिए, किसान "मेघदूत" ऐप से अपडेट प्राप्त कर सकते हैं और गूगल प्ले स्टोर (एंड्रॉ इड उपयोगकर्ता) और ऐप सेंटर (आईओएस उपयोगकर्ता) पर उपलब्ध दामिनी" ऐप सेबिज ली की स्थिति के बारे में अपडेट प्राप्त कर सकते हैं। एनडीवीआई राज्य के अलग-अलग क्षेत्रों में 0.15-0.40 के बीच अच्छी कृषि शक्ति दर्शाता है। 22.11.2024 से 28.11.2024 के दौरान भारी कमी वाली वर्षा और सामान्य अधिकतम-न्यूनतम तापमान की प्रवृत्ति दर्शायी है ।

लघु संदेश सलाहकार:

आईएमडी के पूर्वानुमान के अनुसार आगामी सप्ताह में मौसम साफ रहने की उम्मीद है, इसलिए कृषि कार्य तदनुसार निर्धारित किया जा सकता है।

फ़सल विशिष्ट सलाह:

फ़सल	फ़सल विशिष्ट सलाह
गन्ना	फसल की नियमित निगरानी की जानी चाहिए तथा 25-30 दिन के अंतराल पर निराई-गुड़ाई का कार्य किया जाना चाहिए। आवश्यकतानुसार सिंचाई की जानी चाहिए।
अरहर (लाल चना/ अरहर)	अगेती किस्मों की कटाई तब की जानी चाहिए जब 75-80% फलियाँ परिपक्व हो जाएँ, जबकि देर से आने वाली किस्मों के मामले में, फली छेदक कीट के प्रकट होने पर अनुशंसित पद्धतियाँ अपनाई जानी चाहिए। कीटों का अनुश्रवण करने के लिए 5-6 फेरोमोन प्रपंच/है. की दर से फसल में फूल आतें समय खेत में लगाए। 5 -6 मॉथ प्रति प्रपंच यदि दो-तीन दिन लगातार दिखाई दे तो इनमें में से किसी एक दवा का इस्तेमाल करें एन. पी. वी. 500 सूड़ी तुल्यांक अथवा बी. टी. 1 कि. ग्रा./है या इंडोक्साकार्ब 14. 5 ई.सी. की 353-400 मि.ली. या इमामेक्टिन बेन्जोएट 5 एस.जी. की २२० मि. ग्रा. या स्पाइनोसेड 45 एस. सी. की 125-162 मि. ली. मात्रा प्रति हैक्टर।आवश्यकता पर इनका दूसरा छिड़काव 15 दिन बाद करें।
चना	फसल की नियमित निगरानी करनी चाहिए तथा 25-30 दिन के अंतराल पर फसल की निराई-गुड़ाई करते रहना चाहिए। खरपतवारनाशी के प्रयोग के मामले में 32 ई.सी. (पेन्डीमेथालिन 32 ईसी + इमाजेथापायर 2 ईसी) जैसे रसायन 1.0 किलोग्राम की दर से 200-250 लीटर पानी में मिश्रित कर छिड़काव किया जा सकता है। कीटों का अनुश्रवण करने के लिए 5-6 फेरोमोन प्रपंच/है. की दर से फसल में फूल आतें समय खेत में लगाए। 5 -6 मॉथ प्रति प्रपंच यदि दो-तीन दिन लगातार दिखाई दे तो इनमें में से किसी एक दवा का इस्तेमाल करें एन. पी. वी. 500 सूड़ी तुल्यांक अथवा बी. टी. 1 कि. ग्रा./है या इंडोक्साकार्ब 14. 5 ई.सी. की 353-400 मि.ली. या इमामेक्टिन बेन्जोएट 5 एस.जी. की २२० मि. ग्रा. या स्पाइनोसेड 45 एस. सी. की 125-162 मि. ली. मात्रा प्रति हैक्टर।आवश्यकता पर इनका दूसरा छिड़काव 15 दिन बाद करें।
मसूर की दाल	फसल की नियमित निगरानी करनी चाहिए तथा 25-30 दिन के अंतराल पर फसल की निराई-गुड़ाई करते रहना चाहिए। खरपतवारनाशी के प्रयोग के मामले में 32 ई.सी. (पेन्डीमेथालिन 32 ईसी + इमाजेथापायर 2 ईसी) जैसे रसायन 1.0 किलोग्राम की दर से 200-250 लीटर पानी में मिश्रित कर छिड़काव किया जा सकता है। कीटों का अनुश्रवण करने के लिए 5-6 फेरोमोन प्रपंच/है. की दर से फसल में फूल आतें समय खेत में लगाए। 5 -6 मॉथ प्रति प्रपंच यदि दो-तीन दिन लगातार दिखाई दे तो इनमें में से किसी एक दवा का इस्तेमाल करें एन. पी. वी. 500 सूड़ी तुल्यांक अथवा बी. टी. 1 कि. ग्रा./है या इंडोक्साकार्ब 14. 5 ई.सी. की 353-400 मि.ली. या इमामेक्टिन बेन्जोएट 5 एस.जी. की २२० मि. ग्रा. या स्पाइनोसेड 45 एस. सी. की 125-162 मि. ली. मात्रा प्रति हैक्टर।आवश्यकता पर इनका दूसरा छिड़काव 15 दिन बाद करें।
रेपसीड	देर से बोई गई फसलों की निगरानी करनी चाहिए और फूल आने से पहले हल्की सिंचाई देनी चाहिए। सिंचाई के बाद फसल में नाइट्रोजन की टॉप ड्रेसिंग करनी चाहिए। कीटों और बीमारियों की उपस्थिति की जाँच करें। । तुलसिता रोग में पत्तियां पीली पड़कर सूखने लगती है तथा सफ़ेद गेरुई रोग में प्रारंभिक अवस्था में पत्तियों के ऊपर हलके पीले धब्बे एवं पत्तियों के नीचे की सतह में सफ़ेद फफोले बनते है जिनसे बाद में पुष्प विन्यास विकृत हो जातें है। तुलसिता रोग की रोकथाम के लिए मेटालैक्सिल 35 डब्लू. एस. या रिडोमिल एम. जेड. 72 की 2 कि. ग्रा. मात्रा 500 लीटर पानी में घोलकर 1-2 छिड़काव करें। यही रोकथाम सफ़ेद गेरुई रोग के लिए भी मान्य है सिवाए रिडोमिल एम. जेड. 72 की 2. 5 कि. ग्रा. मात्रा 800-1000 लीटर पानी में घोलकर 2 -3 छिड़काव करें । माहूँ कीट की रोकथाम हेतु कीट केआर्थिक क्षति स्तर (10-15 पौधों पर 26 -28 माहूँ प्रति 10 से. मी. तने की ऊपरी शाखा) में पाए जाने पर डाइमेथोएट 30 ई.सी. 500 मि. ली. प्रति हैक्टर/ थीयामेथोक्जाम 25 डब्लू. जी. 100 ग्राम का 600 -700 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टर की दर से 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।
सरसों	देर से बोई गई फसलों की निगरानी करनी चाहिए और फूल आने से पहले हल्की सिंचाई देनी चाहिए। सिंचाई के बाद फसल में नाइट्रोजन की टॉप ड्रेसिंग करनी चाहिए। कीटों और बीमारियों की उपस्थिति की जाँच करें। । तुलसिता रोग में पत्तियां पीली पड़कर सूखने लगती है तथा सफ़ेद गेरुई रोग में प्रारंभिक अवस्था में पत्तियों के ऊपर हलके पीले धब्बे एवं पत्तियों के नीचे की सतह में सफ़ेद फफोले बनते है जिनसे बाद में पुष्प विन्यास विकृत हो जातें है। तुलसिता रोग की रोकथाम के लिए मेटालैक्सिल 35 डब्लू. एस. या रिडोमिल एम. जेड. 72 की 2 कि. ग्रा. मात्रा 500 लीटर पानी में घोलकर 1-2 छिड़काव करें। यही रोकथाम सफ़ेद गेरुई रोग के लिए भी मान्य है सिवाए रिडोमिल एम. जेड. 72 की 2. 5 कि. ग्रा. मात्रा 800-1000 लीटर पानी में घोलकर 2 -3 छिड़काव करें । माहूँ कीट की रोकथाम हेतु कीट केआर्थिक क्षति स्तर (10-15 पौधों पर 26 -28 माहूँ प्रति 10 से. मी. तने की ऊपरी शाखा) में पाए जाने पर डाइमेथोएट 30 ई.सी. 500 मि. ली. प्रति हैक्टर/ थीयामेथोक्जाम 25 डब्लू. जी. 100 ग्राम का 600 -700 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टर की दर से 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।
गेहूँ	शीघ्र पकने वाली किस्मों की बुवाई माह के दूसरे पखवाड़े में करनी चाहिए। शुष्क परिस्थितियों में पहली सिंचाई 25-30 दिन के अन्तराल पर करनी चाहिए।
जौ	सिंचित अवस्था में फसल की बुवाई माह के दूसरे पखवाड़े में करनी चाहिए।
फील्ड पी	फसल की नियमित निगरानी करनी चाहिए तथा 25-30 दिन के अंतराल पर फसल की निराई-गुड़ाई करते रहना चाहिए। खरपतवारनाशी के प्रयोग के मामले में 32 ई.सी. (पेन्डीमेथालिन 32 ईसी + इमाजेथापायर 2 ईसी) जैसे रसायन 1.0 किलोग्राम की दर से 200-250 लीटर पानी में मिश्रित कर छिड़काव किया जा सकता है। कीटों का अनुश्रवण करने के लिए 5-6 फेरोमोन प्रपंच/है. की दर से फसल में फूल आतें समय खेत में लगाए। 5 -6 मॉथ प्रति प्रपंच यदि दो-तीन दिन लगातार दिखाई दे तो इनमें में से किसी एक दवा

फ़सल	फ़सल विशिष्ट सलाह
	का इस्तेमाल करें एन. पी. वी. 500 सूड़ी तुल्यांक अथवा बी. टी. 1 कि. ग्रा./है या इंडोक्साकार्ब 14. 5 ई.सी. की 353-400 मि.ली. या इमामेक्टिन बेन्जोएट 5 एस.जी. की २२० मि. ग्रा. या स्पाइनोसेड 45 एस. सी. की 125-162 मि. ली. मात्रा प्रति हैक्टर।आवश्यकता पर इनका दूसरा छिड़काव 15 दिन बाद करें।

बागवानी विशिष्ट सलाह:

बागवानी	बागवानी विशिष्ट सलाह
मूली	यूरोपीयन किस्म को 6-8 किग्रा/हेक्टेयर और एशियाई किस्म को 10-12 किग्रा/हेक्टेयर की दर से बोया जा सकता है। लाइन से लाइन की दूरी 20-25 सेमी और पौधे से पौधे की दूरी 8-10 सेमी होनी चाहिए।
सब्जी पीईए	कीटों और बीमारियों के लिए फसलों की नियमित निगरानी आवश्यक है। परिपक्व फलियों की कटाई करें।

पशुपालन विशिष्ट सलाह:

पशुपालन	पशुपालन विशिष्ट सलाह
भेंस	बदलते मौसम के साथ पशुओं के नवजात शिशुओं में निओमोनिया की संभावना अधिक रहती है इसलिए सलाह दी जाती है कि पशु को ठंड से बचाना चाहिए और पशुओं को गर्म भोजन देना चाहिए।
गाय	मानसून के बाद आहार नाल में विभिन्न प्रकार के आंतरिक परजीवी उत्पन्न हो सकते हैं इसलिए सबसे पहले पशुओं को कृमिनाशक दवा देनी चाहिए।